आंतरिक यात्रा

आंतरिक यात्रा का अर्थ क्या है? आंतरिक यात्रा का अर्थ है आत्मा की अवस्था तक पहुँचने के लिए अपने आप में यात्रा करना, तीनों गुणों का " अधिपति " बनना। कौन इस आंतरिक यात्रा कर सकता है? केवल वे व्यक्ति जिन्होंने रजस, तमस और सत्त्व गुणों से संबंधित जन्म लिए हैं, वे इस आंतरिक यात्रा कर सकते हैं।

इन तीनों प्रकार के जन्मों में, हम समस्याओं को मारने की कोशिश करते हैं, या उनसे भागने की कोशिश करते हैं, या उन्हें बदलने की कोशिश करते हैं, और अंत में उन समस्याओं के कारण पराजित हो जाते हैं और मर जाते हैं। इन तीनों जन्मों में, हम तीनों गुणों के गुलाम बने रहते हैं, अर्थात हम उनके नियंत्रण में रहते हैं और उनके अनुसार काम करते हैं, उन्हें वश में करने में असमर्थ रहते हैं। अंत में, हम इन जन्मों को अधूरा या दुखी रहते हुए समाप्त करते हैं। इन तीनों जन्मों में जीवन का अनुभव करने के बाद, हम आंतरिक यात्रा करने के लिए योग्य हो जाते हैं और "त्रिगुणों के अधिपति" बन जाते हैं।

केवल वही व्यक्ति त्रिगुणों का अधिपति बन सकता है जिसने तीनों गुणों से संबंधित सभी विशेषताओं का अनुभव किया है। यहाँ, यहाँ, विशेषताएँ ऐसे गुणों को दर्शाती हैं जैसे की: काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान और ईर्ष्या के साथ-साथ उनके विपरीत - योगदान, दया, उदारता, वैराग्य, कोमलता और प्रेम। इसलिए, केवल वही व्यक्ति जिसने तीनों गुणों के जन्मों का अनुभव किया है, शुद्ध सत्त्विक जन्म ले सकता है, सभी गुणों को मिलाकर उनका एक साथ उपयोग करके सृजन-संचालन-विनाश करते हुए, " त्रिगुणाधिपति या आत्मा " बन सकता है।

शुद्ध ऊर्जा में त्रिगुण समान अनुपात में मिलकर एक हो जाते हैं। इसलिए, यदि आपके पास बुराईयाँ हैं, तो खुश रहें, क्योंकि जब आपके भीतर अच्छी, बुरी और तटस्थ ऊर्जा मिलकर एक होती है, तभी आप शुद्ध हो सकते हैं और भगवान से मिल सकते हैं। इसका मतलब है कि समस्या यहाँ विभाजन है, और समाधान है एकता। इसलिए, मेरे ज्ञान के अनुसार, मैं कहना चाहता हूँ कि केवल वे लोग जो त्रिगुणाधिपति बनना चाहते हैं, नए ऊर्जा की अवधारणा के लिए पात्र हैं (eligible to follow NewEnegy concept)। जो लोग यह सोचकर जीवन जीते रहते हैं कि मेरे द्वारा अपनाई गई गुणवत्ता महान है और अन्य सभी नीचे हैं, वे इस अवधारणा के लिए पात्र नहीं हैं।

अब तक, हम समस्याओं के समाधान बाहरी रूप से ढूंढते आए हैं, यह सोचते हुए कि हमारी परेशानियां दूसरों से आती हैं और उन्हें बदलने की कोशिश की हैं। लेकिन हमारी परेशानियां कम नहीं हो रही हैं, बल्कि बढ़ती जा रही हैं। इसका कारण यह है कि हम खुद को बदलने के

बजाय दूसरों को बदलने की कोशिश कर रहे हैं, और बाहरी कारण को नजरअंदाज करके आंतरिक कारण को नहीं ढूंढ रहे हैं।

पृथ्वी पर आने का उद्देश्य यह महसूस करना है कि मैं भगवान हूँ। इसलिए, हमें खुद को बदलने की आवश्यकता है, मानव से दिव्य-मानव बनने के लिए, जीवात्मा से आत्मा और फिर परमात्मा बनने के लिए। इसलिए, जो लोग नई ऊर्जा में प्रवेश करते हैं, उन्हें दूसरों को बदलने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि जब वे खुद को बदलते हैं तो वे अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढेंगे।

यहाँ जीवात्मा एक गुण से चिपक जाता है और केवल उस सीमा तक ही फैलता है, और अन्य गुणों को अंदर नकारता है। आत्मा सभी गुणों का रचनात्मक उपयोग करती है, और सभी शरीरों, सभी भागों और सभी अवस्थाओं को अंदर फैलाती है। परमात्मा निराकार है और सर्वत्र व्याप्त है, यह ब्रह्मांड में हर जगह और हर रूप में व्याप्त है, और यह स्वयं ब्रह्मांड में हर रूप में प्रकट हुआ है।

अगर आप आंतरिक यात्रा करना चाहते हैं, तो आपको कहाँ से शुरू करना चाहिए? सबसे पहले, आपको अपने जीवन में जो काम नहीं कर रहा है, उसे बदलने की आवश्यकता है। आपको जो चीजें खुशी देती हैं, उन्हें बदलने की जरूरत नहीं है। लेकिन जहाँ खुशी नहीं है, वहाँ आपको बदलाव लाने की आवश्यकता है। मैं इन्हें 'समस्याएँ' या 'नकारात्मकता' कहता हूँ। मैंने इन 'नकारात्मकता' को अपने गुरु के रूप में माना और अपनी आंतरिक यात्रा शुरू की। इसलिए, मैं आपको भी यही सलाह देता हूँ।

यहाँ हम शाश्वत भगवान को नहीं खोज पाते हैं, क्योंकि हम सोचते हैं कि अशाश्वत समस्याएँ जिनका समाधान हमें नहीं मिल रहा है, वे शाश्वत हैं। इसका मतलब है कि हम मानते हैं कि अशाश्वत चीजें शाश्वत रहेंगी। यहाँ अशाश्वत समस्याओं का मतलब है, उदाहरण के लिए, घुटने के जोड़ों में दर्द आदि।

तो समस्या आने पर क्या करें? सबसे पहले, जानबूझकर या अनजाने में, मैंने इस समस्या को बनाया है, इसलिए मैं इसकी जिम्मेदारी लेता हूँ और इसे जैसा है वैसा ही स्वीकार करता हूँ। फिर, इसके बारे में एक इच्छा बनाएं। क्योंकि केवल जब आप इच्छा चुनते हैं और उसके अनुसार अभ्यास करते हैं, तो आपका जीवन आपकी चुनी हुई इच्छा के अनुसार बढ़ेगा, न कि डिज़ाइन किए गए भाग्य के अनुसार। इसलिए, इच्छा करें कि मुझे नकारात्मक अनुभव की अवस्था से नकारात्मक को दिव्य रूप से या त्रिगुणाधिपति के रूप में अनुभव करने की अवस्था में ले जाएं, और इसी तरह, मुझे सकारात्मक अनुभव की अवस्था से सकारात्मक को दिव्य रूप

से या त्रिगुणाधिपति के रूप में अनुभव करने की अवस्था में ले जाएं। यह भी इच्छा रखें कि मुझे आत्मा की तरह सभी हिस्सों में फैलना है। फिर, समस्या के बारे में चिंता किए बिना, बस पिघल जाएं जैसा कि मैंने 'पिघलजाओ' विषय में कहा था, और शुद्ध होने के बाद, भीतर फैल जाएं और यथासंभव समय तक उस अवस्था में रहें।

फिर, आपकी समस्या का समाधान मिल सकता है। अगर नहीं, तो समस्या से संबंधित नकारात्मक विचार और भावनाएँ उठेंगी। जब वे उठें, तो जागरूकता से उनका अवलोकन करें। ये विचार या भावनाएँ तीन प्रकार के होंगे - वे आपको समस्या से भागने के लिए कहेंगे, या उसे मारने के लिए, या उसे बदलने के लिए। ये सभी पिछले अनुभवों या पिछले जन्मों के अनुभवों के माध्यम से बनाई गई विश्वास या मान्यताओं से संबंधित हैं।

उदाहरण के लिए, मान लें कि हमने पिछले जन्म में कैंसर से मृत्यु पाई थी। उस अनुभव और उससे जुड़े लक्षण हमारे भीतर बने रहते हैं। इससे एक विश्वास बनती है कि हम कैंसर से मर जाएंगे, और इससे जुड़े विचार उठते हैं। अब, हमें एक नई विश्वास अपनानी होगी कि यह कैंसर भी मुझे आत्मा की अवस्था में ले जाएगा। हमें एक नई विश्वास अपनानी होगी कि सब कुछ मुझे आत्मा की अवस्था में ले जाएगा।

नई ऊर्जा में प्रवेश करने के बाद, हमारा पहला लक्ष्य अपने पिछले कर्मों को ठीक करना, मिटाना या शुद्ध करना है। क्योंकि चमत्कारी भविष्य, भूतकाल को डिलीट करने पर ही निर्भर होता है। अर्थात्, अगर हम अपने मन को एक मेमोरी बैंक की तरह उपयोग करते हैं, तो पिछली घटनाएं दोहराई जाएंगी, जिससे उबाऊपन(boredom) होगा। लेकिन अगर हम अपने मन को शुद्ध रखते हैं, तो हम अद्भुत चीजें देखेंगे।

इसलिए, आपको अपने भीतर पिछले जन्मों से संबंधित सभी विचारों और भावनाओं को पूरी तरह से अनुभव करना होगा। पहचानें कि वे आपके अपने सही-गलत अवस्था से उत्पन्न हुए हैं, न कि दूसरों से; और दूसरों के शब्द या कार्यों ने आपके भीतर छिपी हुई पीड़ा को उजागर करने में मदद की है। इस समझ के साथ, अपने विचारों और भावनाओं को जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करें और उन्हें आपको अगली अवस्था में ले जाने के लिए आमंत्रित करें। फिर, वे आपको भागने की इच्छा से मारने की इच्छा में, मारने की इच्छा से बदलने की इच्छा में, और अंततः जैसा है वैसा स्वीकार करने की अवस्था (accept as it is) में ले जाएंगे।

अगर आप उन विचारों को अगली अवस्था में ले जाने के लिए आमंत्रित नहीं करते हैं, तो वे आपके मन में आते रहेंगे। इसलिए, एक 'मित्र या शिष्य' की तरह रहें और उनसे आगे बढ़ने के

लिए अनुरोध करें। कुछ दिनों के लिए, उन विचारों से शब्दों में बात करें और फिर उस जागरूकता में रहें। बस यह देखें कि आप अगली अवस्था में बढ़ रहे हैं या नहीं।

उदाहरण के लिए, मान लें कि आप दर्द का अनुभव कर रहे हैं। आप सोच सकते हैं, "मैं दूसरे कार्यों में व्यस्त रहकर दर्द को नजरअंदाज कर दूंगा।" फिर, दर्द से बचने की कोशिश करें। अगर यह काम करता है, तो ठीक है। अगर नहीं, तो भागने के विचार को जैसा है वैसा ही स्वीकार करें और उसे अगली अवस्था में ले जाने के लिए कहें।

इसके बाद आपको एक और विचार आ सकता है कि, दवाई का उपयोग करें और उस दर्द को मार दें या दबा दें। अगर दवा काम करती है, तो ठीक है। अगर नहीं, तो दर्द को जैसा है वैसा ही स्वीकार करें और उसे अगली स्थिति में ले जाने के लिए कहें।

इसके बाद, आप सोच सकते हैं, "मैं दर्द से बात करूंगा और इसे बदलने की कोशिश करूंगा।" अपने भीतर दर्द को बदलने की कोशिश करें। अगर यह काम करता है, तो ठीक है। अगर नहीं, तो बदलने के विचार को जैसा है वैसा ही स्वीकार करें और उसे अगली अवस्था में ले जाने के लिए कहें, जो है इसे जैसा है वैसा ही स्वीकार करना (accept as it is) और दर्द का आनंद लेना।

अगर आपका मन अभी भी भागने, मारने या बदलने की कोशिश कर रहा है, और आपने पहले ही उन उपायों को आजमाया है और असफल रहे हैं, तो इसके साथ मजबूती से बहस करें और इसमें शामिल होने से इनकार करें। कहें, "मैंने आपके सुझाव को आजमाया है और यह काम नहीं किया, तो अब मैं स्वीकार करूंगा और देखूंगा कि क्या होता है अगर मैं सिर्फ मौन रहूं।"

लेकिन, समझें कि अपने मन के साथ बहस करने की शक्ति केवल तभी आती है जब आपने पहले ही इसके द्वारा सुझाए गए तरीकों को जागरूकता से आजमाया है।

अगर आपके पास ताकत नहीं है, मतलब आपके विचार सहयोग नहीं कर रहे हैं, तो " युद्ध" विषय में वर्णित के अनुसार करें।

दर्द का अनुभव करते समय, अपने आप को 'अपाधर्म' की स्थिति में मानें - एक ऐसी स्थिति जो अच्छे और बुरे, पाप और पुण्य, सही और गलत के भेदभाव से परे है। इसका कारण यह है कि बीमारी का इलाज तभी होगा जब उसके मूल कारण को समाप्त किया जाएगा, अन्यथा मरीज की मृत्यु हो सकती है। इसी तरह, आपके भीतर का दर्द तभी शांत होगा जब आप अपने

पिछले जन्म में जिन भूमिकाओं को निभाया था जिन्होंने दर्द का कारण बना, उन्हें पूरे दिल से स्वीकार करेंगे और अनुभव करेंगे। अगर नहीं, तो यह आपको खा सकता है।

तो, अपने आप पर लगाए गए नियमों को अलग रखें और, भले ही यह गलत लगे, रोने, डांटने, चीखने या जिस तरह से भी प्राकृतिक लगे, उस तरह से दर्द को साफ करने की कोशिश करें। यह इसे दूर करने का एकमात्र तरीका है।

दर्द आमतौर पर तब उठता है जब आप अकेले होते हैं, और अगर आप इसे दबाते हैं और अंदर धकेलते हैं, तो यह आपका दुश्मन बन जाएगा और जरूर आपके साथ बदला लेगा। यह दर्द तब आएगा जब आप दूसरों के साथ आनंद लेना चाहते हैं, आपको परेशान तब करेगा, आपके व्यवहार को असामान्य बनाएगा, और दूसरों द्वारा अपमान का कारण बनेगा। भले ही आप मदद के लिए गिड़गिड़ाएं, दर्द आपके साथ सहयोग नहीं करेगा। इसलिए, अपनी ऊर्जा को दबाने के बजाय, "मार्गदर्शक" विषय में सुझाए गए अनुसार शुद्धि की प्रक्रिया जारी रखें, बिना कुछ छुपाए।

जब हमने सभी संभव समाधानों को आजमाया और फिर भी असफल रहे, तो हम समस्या को जैसी कि वह है वैसी ही स्वीकार करके, आत्मसमर्पण कर देते हैं। हम इसे स्वीकार करते हैं और अपने प्रतिरोध को छोड़ देते हैं। इसका कारण यह है कि समस्या का प्रभाव हमसे अधिक मजबूत है, इसलिए हमें उच्च शक्ति के सामने आत्मसमर्पण करना होगा। शुरू में, आप सोच सकते हैं, "मैं इस नकारात्मकता के सामने कैसे आत्मसमर्पण कर सकता हूँ?" लेकिन आत्मसमर्पण करने और उसके बाद होने वाले अद्भुत परिवर्तन को देखने के बाद, आप सीखेंगे कि जब कोई और समस्या उत्पन्न होती है तब आप अपनी अहंकार को जल्दी छोड़कर, उस समस्या को आत्मसमर्पण कर देंगे।

उस समय, समस्या या दर्द आपको मार देगा, मतलब अशुद्ध जीवात्मा को मार देगा, और केवल दर्द ही रह जाएगा। कुछ समय के बाद, "शुद्ध जीवात्मा या अधिपति" इसमें से उभरेगा। यह प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से होनी चाहिए और व्यक्ति द्वारा मजबूर नहीं की जानी चाहिए। यह तब होता है जब कोई व्यक्ति दर्द को बिना प्रतिरोध के खुद को खाने देता है। आप सोच सकते हैं कि दर्द व्यक्ति को कैसे शुद्ध कर सकता है? क्योंकि हम मानते हैं कि भगवान दर्द के रूप में आया है, यह आपके राग-द्वेष को दूर करता है, और यह दिव्य समस्या आपको शुद्ध करती है।

जब हम कुछ से बचने, बदलने, या नष्ट करने की स्थिति में होते हैं, तो हम एक शुरुआती तैराक की तरह होते हैं। हम डर, तनाव, और अनिश्चितता से भरे होते हैं, और पानी में तैरने

की कोशिश करते हैं, डूबने से बचने के लिए संघर्ष करते हैं। लेकिन जब इस अराजकता से एक अधिपति उभरता है, तो वह पानी पर बिना मेहनत के खुशी के साथ तैरता है। वह डरता नहीं है क्योंकि वह जानता है कि कैसे गहराई में जाना है बिना डूबे, कैसे अपने भीतर के डर और संघर्षों को पार करना है।

इसी तरह, हर बार जब कोई समस्या उत्पन्न होती है, अशुद्ध जीवात्मा घुल जाती है, और अधिपति या शुद्ध जीवात्मा या उच्च स्वंय या उच्च आत्मा जन्म लेता है। इसका कारण यह है कि हमारी वर्तमान ज्ञान और समझ स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त नहीं है। यहाँ ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि हमारी वर्तमान अनुभवात्मक ज्ञान दूसरों के लिए उपयोगी हो सकता है, लेकिन हमारे लिए नहीं। इसका कारण यह है कि हम इस पृथ्वी पर अपनी आंतरिक ऊर्जा को विकसित करने के लिए, भगवान से नए ज्ञान सीखने के लिए, और नए अनुभव प्राप्त करने के लिए आए हैं।

अधिपति

यह अधिपति शुद्ध चेतना और शुद्ध ऊर्जा के संयोजन के रूप में उभरता है। वह एक बच्चे की तरह स्वच्छ है, जो सही और गलत, अच्छा और बुरा के द्वैतवादी विचारों से परे है। वह निराकार है, फिर भी सर्वव्यापी है, और सब कुछ दिव्य के रूप में देखता है। वह विरोधी शक्तियों के साथ खिलवाड़ करता है, सब कुछ सहजता से लेता है, और निर्लिप्त रहता है, जानता है कि समस्या और वह दो अलग-अलग चीजें हैं। यहाँ, अधिपति के उदय से समस्या का रूपांतरण होता है और वह स्वयं को सुलझाने की दिशा में बढ़ने लगती है, जिससे हमारे लक्ष्यों की प्राप्ति होती है।

अधिपति भूतकाल की बातों से प्रभावित नहीं होता है, इसलिए वह शांति से रहता है और आत्मा की प्रेरणा का पालन करता है, जो समस्या के माध्यम से मिलती है। जैसा कि 'मार्गदर्शक' विषय में कहा गया है, अधिपति भी साक्षी स्थिति में रहते हुए समस्या से संबंधित गुणों को दिव्य तरीके से अनुभव करता है। इसलिए मैंने शुरू में नकारात्मक को दिव्य तरीके से अनुभव करने की इच्छा रखने का सुझाव दिया था। इच्छा पूर्ति के बाद, आने वाली शुद्ध सकारात्मक शक्तियों को भी, त्रिगुणाधिपति दिव्य रूप से अनुभव करता है।

यहाँ, आप सोच सकते हैं कि, त्रिगुणाधिपति या आत्मा के प्रकट होने से समस्याओं का समाधान और आनंद की प्राप्ति कैसे आएगा। इसका उत्तर यह है कि यह अधिपति या आत्मा शाश्वत, अमर और अपरिवर्तनीय है। वह स्थिर रहता है, किसी भी समस्या से प्रभावित नहीं होता है जो उसके रास्ते में आती है। यहाँ, त्रिगुणाधिपति की स्थिति में कोई जीत या हार नहीं

होती क्योंकि वह एकमात्र है जो अस्तित्व में है और उसके भीतर की सभी चीजें उसकी अपनी ताकत हैं। इसलिए, उसके भीतर जीतने के लिए कोई विरोधी नहीं है। यह शाश्वत आत्मा हमेशा मौजूद रहता है, नाशवान चीजों और बदलती शक्तियों के साथ खेलता है, और खेलने के बाद, वह सभी नाशवान चीजों को अपने में विलीन कर देता है।

क्योंकि, जैसे कि अंधकार⇌संध्या⇌प्रकाश, विपरीतताएं आती हैं और जाती हैं, इस आत्मा को यह स्वाभाविक ज्ञान है कि उसका संयोग माया⇌दिव्यमाया⇌दिव्य के साथ हमेशा आसान और सुलभ है। यहाँ, भगवान को छोड़कर सब कुछ नाशवान है, जिसमें शरीर, मन, हृदय, पिछले जन्म, बाहरी वस्तुएं और बाहरी मामले शामिल हैं। ये सभी नाशवान हैं, अर्थात् ये परिवर्तन के अधीन हैं। हमें दुख का अनुभव तब होता है जब हम खुद को उन चीजों से बांधते हैं जो निरंतर बदल रही हैं।

लेकिन ये सभी अस्थिरताएं शुद्ध ऊर्जा से बनी हैं। चूंकि अधिपति शुद्ध है, वह सभी रूपों में शुद्ध ऊर्जा को पहचान सकता है और सभी रूपों को शुद्ध के रूप में देख सकता है। इसलिए, अधिपति शाश्वत शुद्ध आत्मा से जुड़ता है और अशाश्वत समस्या और इसके द्वारा शुद्ध ऊर्जा को एक साथ दिव्य के रूप में अनुभव करता है। वह इस अभ्यास को तब तक जारी रखता है जब तक कि समस्या गायब नहीं हो जाती और केवल शुद्ध ऊर्जा शेष नहीं रहती।

इसी तरह, धर्म विषय में उल्लेख किया गया है, जब भी एक विचार उत्पन्न होता है, आप तीनों को चुनते हैं, लेकिन शुरू में आप पक्षपात रवैया में रहकर, आप विरोधों के बीच किसी एक पक्ष में रहेंगे और अन्य पक्षों से द्वेष करेंगे। उदाहरण के लिए, आप हमेशा स्वस्थ रहना चाहते हैं और इसके प्रति जुड़े रहते हैं, बीमारी और तटस्थता से नफरत करते हैं। इससे बीमारी और तटस्थता आपकी मदद नहीं कर पाती। यहाँ, तटस्थता का अर्थ है, उदाहरण के लिए, शरीर में एक ट्यूमर होना जो आपको परेशान नहीं करता, या यह स्पष्ट नहीं है कि यह स्वस्थ या अस्वस्थ है।

संबंधित मामलों में, हम पक्षपाती बने रहते हैं और सोचते हैं 'मेरा सही है, तुम्हारा गलत है'। लेकिन हमारा लक्ष्य जीतना नहीं है, बल्कि तीन गुणों के साथ खेलना, उनका अधिपति बनना, और फिर उन्हें शुद्ध करना, खुद को शुद्ध बनाना है। इसलिए, पक्ष लेना और दूसरों से नफरत करना या उन्हें नष्ट करने की कोशिश करना काम नहीं करेगा।

अगर स्वास्थ्य कहता है, 'आओ, रोग और तटस्थता, मेरे साथ मिल जाओ,' तो वे नहीं मिलेंगे, क्योंकि ये विरोधी शक्तियां अपने अपने अभिमान के कारण एक दूसरे को समझने में असमर्थ हैं। इसका मतलब है कि एक रूप दूसरे को नहीं समझ सकता, इसलिए यह केवल रूपों के बारे

में नहीं है, बल्कि शुद्ध होने के बारे में भी है। दूसरे शब्दों में, यह केवल भूमिकाओं के बारे में नहीं है, बल्कि उन्हें सौहार्दपूर्वक मार्गदर्शन करने वाले के बारे में भी है। इसका मतलब है कि केवल सूक्ष्म और शुद्ध ही स्थूल में प्रवेश कर सकता है। इसलिए, स्वास्थ्य के प्रति मोह को छोड़ना और अधिपति को जन्म देना अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे एक शुद्ध शरीर का निर्माण होता है।

ये विरोधी शक्तियां अपने अभिमान और ज्ञान को अधिपति के चरणों में अर्पित कर देती हैं, और उसके साथ एकता प्राप्त कर लेती हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अधिपति इन विरोधी अनुभवों को अलगाव के बिना दिव्य मानता है, और उन्हें अपने दिव्य प्रेम में समाहित कर लेता है। इसी तरह, विरोधी शक्तियां समझती हैं कि वे शुद्ध रूप हैं, और अधिपति एक दूसरे की महानता को समझाता है, जिससे उनमें प्रेम उत्पन्न होता है। इसके परिणामस्वरूप, विरोधी शक्तियां एक दूसरे को पूरी तरह से समझती हैं और एक दूसरे के साथ मिलकर काम करती हैं, सामंजस्य में एक साथ विकसित होती हैं, एक दूसरे पर निर्भर होती हैं, और अंततः पवित्र अखंड स्थिति में समाहित हो जाती हैं।

जब साधाना के माध्यम से शारीरिक समस्या का समाधान करने की कोशिश की जाती है, तो अधिपति केवल समस्या पर ही ध्यान केंद्रित नहीं करता है, बल्कि आपके दैनिक जीवन में निभाई जाने वाली सभी भूमिकाओं पर भी ध्यान देता है। इसका कारण यह है कि भूमिकाओं को सही तरीके से नहीं निभाने से शारीरिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इसलिए, अधिपति शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, आर्थिक और रिश्ता समस्याओं से संबंधित सभी भूमिकाओं पर विचार करता है, जिन्हें आप अब तक निभा चुके हैं, साथ ही साथ दूसरों द्वारा आपके ऊपर थोपी गई भूमिकाओं पर भी ध्यान देता है। फिर, अधिपति इन भूमिकाओं को अपने में समाहित कर लेता है, भले ही वे निम्न हों। इसका कारण यह है कि शुद्ध ऊर्जा आपकी पिछली इच्छाओं के कारण तीन विरोधी भागों में विभाजित हो गई थी, और केवल पुनर्मिलन के द्वारा ही वे फिर से शुद्ध हो सकती हैं, जिसका अर्थ है कि भूतकाल मिट जाता है। इच्छाओं के बारे में अधिक जानकारी के लिए 'युद्ध' विषय पढ़ें।

इसके बाद, साधाना के माध्यम से निर्मित शुद्ध ऊर्जा और अधिपति, आपके भीतर की शुद्ध ऊर्जा और चेतना के साथ मिल जाते हैं। इस संघ को शिव-शक्ति का संघ कहा जाता है। यह चेतना-ऊर्जा संघ को आत्मा कहा जाता है। जब सब कुछ एक हो जाता है, तो आप ब्रह्मानंद का अनुभव करते हैं। जब आप आत्मा-स्थिति में रहते हैं और शारीरिक समस्या के लिए एक शुद्ध समाधान चाहते हैं, तो शुद्ध ऊर्जा आपके पूरे स्वरूप में फैल जाती है, और फिर समस्या गायब हो जाती है।

फिर, आपकी श्रद्धा और विश्वास अपने आप में और अपने भीतर की हर चीज़ में बढ़ता है, जिसमें आपका शरीर, मन, हृदय, आत्मा और पिछले जन्म की सभी भूमिकाएं शामिल हैं। आप समझते हैं कि आपने अपनी शुद्ध ऊर्जा को विभाजित करके, एक भूमिका चुनकर और दूसरों को दुश्मन के रूप में देखकर समस्या को बनाया था। आप समझते हैं कि आपने इतने लंबे समय तक लड़कर इस समस्या को जारी रखा था। अब, आपको पर्याप्त हो गया है और आपने तीनों भागों को एक साथ मिलाकर, उन्हें अपने भीतर घुला दिया है। इस प्रकार, आप अनुभवजन्य रूप से समझते हैं कि आप अपने जीवन के सृष्टिकर्ता (ब्रह्मा), पालक (विष्णु) और संहारक (महेश्वर) हैं।

जब आप अपने भीतर की सभी चीजों को अधिपति के रूप में एकजुट कर रहे होते हैं, तो शुरुआत में आपको परिणाम मिलेंगे। लेकिन फिर, आप माया के प्रभाव में आकर अपना रास्ता खो देंगे। बाद में, आप फिर से अधिपति बन जाएंगे और माया के प्रभाव से निकलकर आत्मा-स्थिति की ओर बढ़ने के लिए तैयार होंगे। अपने साधना को कुछ समय तक जारी रखने के बाद, आपको एहसास होगा कि माया और आत्मा के सहयोग से ही आप आत्मा-अवस्था प्राप्त करने के योग्य बनेंगे। दूसरे शब्दों में, जैसा कि ' आत्मसमर्पण ' विषय में उल्लेख किया गया है, आप केवल तभी आत्मा-अवस्था तक पहुंचेंगे जब आपकी समस्या सामान्य से अधिक गहरी होगी।

यह साधना एक फिल्म की शूटिंग की तरह है। फिल्मांकन के दौरान, अभिनेता और एक निर्देशक होता है जो सबको अभिनय करने के लिए कहता है। निर्देशक विरोधी भूमिकाएं बनाता है और फिल्म की शूटिंग करता है। जैसे ही शूटिंग समाप्त होती है, अभिनेता अपनी भूमिकाओं को भूल जाते हैं और घर जाते हैं बिना यह सोचे कि उन्होंने क्या अच्छे या बुरे काम किए हैं। फिर, वे अगले दिन वापस आते हैं और अपनी भूमिकाओं को जारी रखते हैं या नए भूमिकाओं में अभिनय करते हैं।

इसी तरह, हमने अब तक तीन प्रकार की भूमिकाएं निभाई हैं। अब, समय आ गया है कि उन सभी को एकजुट करें और भगवान तक पहुंचें। यदि आप जीतना चाहते हैं या महसूस करते हैं कि मैंने सही-गलत किया, तो आपको अभिनेता के रूप में जारी रखना होगा और भगवान तक नहीं पहुंच सकते। इसलिए, सही या गलत महसूस किए बिना, आपने जो भूमिकाएं निभाई हैं और जो दूसरों ने आपके साथ निभाई हैं, उन्हें मिलाएं और मिटा दें। हर दिन, जितना संभव हो, केवल सूत्रधार या निर्देशक के रूप में समय बिताएं और अपने जीवन को नए दृष्टिकोण से देखें।

इसी तरह, यहाँ अहंकार का अर्थ है अपने ज्ञान को विस्तारित नहीं करना और अपने भीतर अपने ज्ञान से एक रूप बनाना और केवल उसमें रहना। यह भी अहंकार है कि 'मैं सही हूँ, और दूसरे नहीं हैं।' जो व्यक्ति यह समझ रखता है कि 'मैं सही हूँ, दूसरे भी सही हैं, और संपूर्ण सृष्टि सही है', वह त्रिगुणाधिपति बन जाता है या त्रिगुणों से परे हो जाता है।

इस साधना को केवल दैनिक जीवन में उत्पन्न होने वाली नकारात्मक समस्याओं तक सीमित न रखें। यदि आपके भीतर कुछ सकारात्मक हो रहा है, लेकिन आपको दिव्य अनुभव नहीं है, तो इसे एक समस्या मानें और सकारात्मक को कहें, 'मुझे अधिपति बनाओ' और इसके समक्ष आत्मसमर्पण करें। तभी आप हर दिन भगवान के साथ आनंदमयी समय बिता सकते हैं। इसलिए, अधिपति बनने के लिए, जो भी अनुभव आपके पास है, उसे दिव्य मानें और उसके प्रति समर्पित हों, और जीवन का आनंद लें।

अनुभव - एक बार, एक आदमी ने मुझे संदेश भेजा, "जब आप मेरी पत्नी के गुरु हैं, तो यह सिखाना आपकी जिम्मेदारी है कि आप उन्हें दूसरों के साथ बाहरी व्यवहार कैसे करना है।" मैं गुस्से में आया, सोचते हुए, "मेरा काम सिर्फ उन्हें सलाह देना है? अगर वह नहीं मानती है, तो क्या यह मेरी गलती है?" लेकिन फिर मैंने जिम्मेदारी ली, सोचते हुए, "मैंने इस स्थिति को सृष्टि किया है।"

एक संदेश आया, "भूतकाल में, आप एक गुरु के रूप में उसका मार्गदर्शन करते थे, लेकिन उसने आपकी सलाह का पालन नहीं किया, इसलिए आप तटस्थ रहे। क्योकि, आपने अपने भीतर तीन पहलुओं को एकीकृत नहीं किया - शिक्षा देना, शिक्षा न देना, और तटस्थ रहना। इसलिए यह समस्या बाहर से उत्पन्न हुई, जो दर्शाता है कि आपको विपरीतताओं को मिलाने की आवश्यकता है।"

मैं उनका आभारी महसूस किया क्योंकि मेरे पिछले कर्म का खुलासा उन के माध्यम से हुआ था। इन तीन पहलुओं को एकीकृत करने के बाद, उनके पति भी मेरे मित्र बन गए। इसका अर्थ है कि जब तक आप अपने पिछले कर्म को मिटा नहीं देते, समस्या जारी रहेगी।

एक अन्य अनुभव - मैं जो लिखता हूँ, उसे फेसबुक समूहों में पोस्ट करता हूँ। एक मास्टर ने मेरा पोस्ट पढ़ा और मुझे संदेश भेजा, "आपके पोस्ट कई लोगों को भ्रमित कर रहे हैं, इसलिए पोस्ट न करें।" मुझे गुस्सा आया, सोचते हुए, "जो मैं कर रहा हूँ वह सही है, और वह गलत है।" मैं जवाब तुरंत देना चाहता था, "अगर आपको पसंद है, तो पढ़ें; अगर नहीं, तो अनदेखा करें।" लेकिन फिर मुझे "फैसला" विषय में जो मैंने लिखा था, वह याद आया - "दोनों सही हैं

या दोनों गलत हैं।" इसलिए, शांत अवस्था में पहुंचने के बाद मैंने शांति से जवाब दिया, "हाँ, मेरे पोस्ट कुछ लोगों को भ्रमित कर सकते हैं, लेकिन समूह में ऐसे भी लोग हैं जो मेरे विचारों से जुड़ते हैं, इसलिए मैं पोस्ट करना जारी रखूँगा। हर विचार हर किसी के साथ नहीं जुड़ता, इसलिए अगर आपको असहज महसूस होता है, तो कृपया मेरे पोस्ट को अनदेखा करें।" इसके बाद, उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिया। कुछ दिनों बाद, उन्होंने मेरे द्वारा पोस्ट किए गए एक अन्य विषय को पसंद भी किया, यह देखकर मुझे अपने स्वयं के आध्यात्मिक अभ्यास के लिए खुशी महसूस हुई।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**